2

वर्ण-विचार
(Phonology)

देखिए, पढ़िए और समझिए–

चूहा

खरगोश

बच्चो! ऊपर दिए गए चित्रों के नाम जब हम पढ़ते हैं, तो हमारे मुख से कुछ ध्वनियाँ निकलती हैं। इन ध्वनियों को हम कुछ चिह्नों द्वारा प्रकट करते हैं; जैसे–

चूहा = चू + हा

खरगोश = ख + र + गो + श

अब हम इनके टुकड़े करके देखते हैं, तो–

च् + ऊ + ह् + आ = चूहा

ख् + अ + र् + अ + ग् + ओ + श् + अ = खरगोश

अब हम इन ध्वनियों के और अधिक टुकड़े करना चाहें, तो नहीं हो सकते, क्योंकि ये भाषा की सबसे छोटी इकाई हैं। इन ध्वनियों को वर्ण या अक्षर कहते हैं।

अतः हम कह सकते हैं कि–

भाषा की वह छोटी-से-छोटी इकाई जिसके टुकड़े न हो सकें, वर्ण कहलाती है।

वर्णों के लिखे गए क्रमबद्ध समूह को वर्णमाला कहते हैं। हिंदी वर्णमाला में मुख्यतः 44 वर्ण होते हैं।

हिंदी की वर्णमाला

स्वर–

अ आ इ ई उ ऊ ऋ

ए ऐ ओ औ

व्यंजन–

क	ख	ग	घ	ङ	–	क वर्ग
च	छ	ज	झ	ञ	–	च वर्ग
ट	ठ	ड	ढ	ण	–	ट वर्ग
त	थ	द	ध	न	–	त वर्ग
प	फ	ब	भ	म	–	प वर्ग
	य	र	ल	व	–	अंतःस्थ
	श	ष	स	ह	–	ऊष्म

याद रखिए

- वर्णमाला में आए 'ङ, ञ, ण, न तथा म' अपने-अपने वर्ग के पंचम वर्ण कहलाते हैं।

इन वर्णों के अतिरिक्त अन्य वर्ण हैं–

- अं तथा अः अयोगवाह वर्ण हैं।
- ऑ, ज़ तथा फ़ आगत ध्वनियाँ हैं। इन्हें दूसरी भाषाओं से लिया गया है।
- ड़ तथा ढ़ अतिरिक्त वर्ण हैं।
- क्ष, त्र, ज्ञ तथा श्र संयुक्त वर्ण हैं।

वर्ण के भेद

हिंदी वर्णमाला को दो भागों में विभाजित किया गया है– स्वर तथा व्यंजन।

स्वर

जिन वर्णों का उच्चारण स्वतंत्र रूप से होता है, उन्हें स्वर कहते हैं। हिंदी भाषा में इनकी संख्या 11 है।

स्वर के भेद

स्वर के तीन भेद हैं–

1. ह्रस्व स्वर 2. दीर्घ स्वर 3. प्लुत स्वर

1. ह्रस्व स्वर – जिन स्वरों के उच्चारण में कम समय लगता है, उन्हें ह्रस्व स्वर कहते हैं। ये संख्या में चार होते हैं– अ, इ, उ, ऋ।

2. दीर्घ स्वर – जिन स्वरों के उच्चारण में ह्रस्व स्वरों की अपेक्षा दोगुना समय लगता है, उन्हें दीर्घ स्वर कहते हैं। ये संख्या में 7 होते हैं– आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ।

3. प्लुत स्वर – जिन स्वरों के उच्चारण में ह्रस्व स्वरों की अपेक्षा तीन गुना समय लगता है, उन्हें प्लुत स्वर कहते हैं, जैसे– ओ३म् यह एक ही है। इसका उच्चारण किसी को पुकारने में किया जाता है।

मात्राएँ

'अ' के अतिरिक्त सभी स्वरों की मात्राएँ होती हैं। इनका प्रयोग दो प्रकार से किया जाता है।

1. मूल रूप में; जैसे– अमरूद, आम, इमली, ओखली आदि।

2. व्यंजनों की मात्रा के रूप में; जैसे– क् + आ = का, च् + इ = चि आदि।

व्यंजनों में जब तक स्वर नहीं मिला होता तब तक उसके नीचे हलंत का चिह्न (्) लगा होता है; जैसे– क्, ख्, ग् आदि।

स्वरों के लिए निर्धारित चिह्न मात्राएँ कहलाती हैं।

मात्राओं के रूप तथा उदाहरण

स्वर	मात्रा	मात्रा सहित व्यंजन	उदाहरण
अ	-	क	कमल, कलम, रमन, नमन
आ	ा	का	काव्य, कार, काम, नाम
इ	ि	गि	गिलास, गिरना, तिल, दिन
ई	ी	ची	चील, चीर, बीन, दीन
उ	ु	पु	पुल, बुलबुल, रुक, रुपया
ऊ	ू	कू	कूप, फूला, रूप, रूमाल
ऋ	ृ	कृ	कृषि, कृषक, पृथ्वी, पृथक
ए	े	के	केला, मेला, तेरा, बेला
ऐ	ै	पै	पैसा, कैसा, वैसा, बैल
ओ	ो	को	कोयल, गोला, घोड़ा, तोला
औ	ौ	कौ	कौआ, जौनपुर, पौधा, मौसा

अं – इसे अनुस्वार कहते हैं। इसका उच्चारण करते समय वायु नासिका से बाहर आती है। इसका चिह्न बिंदु (ं) है। यह व्यंजन के ऊपर लगता है; जैसे– कंधा, बंदर, मंदिर आदि।

अँ – इसे अनुनासिक कहते हैं। इसका उच्चारण करते समय वायु नासिका तथा मुख दोनों से बाहर आती है। इसका चिह्न चंद्रबिंदु (ँ) है। यह व्यंजन वर्णों के ऊपर लगता है; जैसे– साँप, दाँत, आँख आदि।

अः – इसे विसर्ग कहते हैं। इसका उच्चारण आधे 'ह्' की तरह किया जाता है। इसका चिह्न (:) है। यह व्यंजन के बाद या शब्द के बीच में लगता है; जैसे– प्रातः, नमः, दुःख, अतः आदि।

ऑ – इसे आगत ध्वनि कहते हैं। इसका चिह्न (ॅ) है। इसका उच्चारण 'आ' तथा 'ओ' के बीच का होता है। इसका प्रयोग प्रायः अंग्रेज़ी शब्दों में होता है; जैसे– डॉक्टर, बॉल आदि।

याद रखिए

- 'उ' तथा 'ऊ' की मात्रा 'र' के पेट में लगती है; जैसे–

  र् + उ = रु = रुपया, रुचि आदि र् + ऊ = रू = रूमाल, रूपा आदि।

व्यंजन

जिन वर्णों का उच्चारण स्वर वर्णों की सहायता से होता है, उन्हें व्यंजन कहते हैं। हिंदी भाषा में इनकी संख्या 33 है।

उच्चारण की दृष्टि से व्यंजन के तीन भेद हैं–

(क) स्पर्श व्यंजन (ख) अंतःस्थ व्यंजन (ग) ऊष्म व्यंजन

क. स्पर्श व्यंजन – जिन व्यंजनों का उच्चारण करते समय जीभ मुख के किसी स्थान का स्पर्श करती है; उन्हें स्पर्श व्यंजन कहते हैं। इनकी संख्या 25 है। लेकिन इन्हें 5-5 वर्णों के 5 वर्गों में विभाजित किया गया है। प्रत्येक वर्ग का नाम उनके प्रथम वर्ण पर रखा गया है; जैसे–

क वर्ग	–	क	ख	ग	घ	ङ
च वर्ग	–	च	छ	ज	झ	ञ
ट वर्ग	–	ट	ठ	ड	ढ	ण
त वर्ग	–	त	थ	द	ध	न
प वर्ग	–	प	फ	ब	भ	म

ख. अंतःस्थ व्यंजन – जिन व्यंजनों के उच्चारण में जीभ मुख के किसी भाग को पूरी तरह स्पर्श नहीं करती तथा जिनका उच्चारण स्वरों तथा व्यंजनों का मध्यवर्ती-सा प्रतीत होता है, उन्हें अंतःस्थ व्यंजन कहते हैं। स्वर तथा व्यंजनों के मध्य स्थित होने के कारण ही इन्हें अंतःस्थ कहा जाता है। इनकी संख्या चार है– य र ल व।

ग. ऊष्म व्यंजन – जिन व्यंजनों के उच्चारण में वायु तेज गति से मुख में रगड़ खाने के कारण ऊष्मा (गर्मी) ला देती है, उन्हें ऊष्म व्यंजन कहते हैं। ये भी संख्या में चार ही हैं– श ष स ह।

1. संयुक्त व्यंजन – हिंदी भाषा में प्रमुख संयुक्त व्यंजन चार हैं–

क् + ष = क्ष → क्षमा, क्षत्रिय, त् + र = त्र → त्रिशूल, त्रिभुज

ज् + ञ = ज्ञ → यज्ञ, ज्ञान, विज्ञान श् + र = श्र → श्री, श्रम, श्रमिक

2. द्वित्व व्यंजन – जब एक ही व्यंजन दो बार एक साथ मिलकर आता है, उसे द्वित्व व्यंजन कहते हैं। इन्हें लिखते समय पहला व्यंजन आधा तथा दूसरा व्यंजन पूरा होता है; जैसे–

क् + क = क्क → पक्का, ढक्का च् + च = च्च → कच्चा, बच्चा

त् + त = त्त → कुत्ता, पत्ता ट् + ट = ट्ट → कट्टा, पट्टा

3. संयुक्ताक्षर – जब दो अलग-अलग व्यंजन एक साथ मिलते हैं, तो इस मेल से बने व्यंजन संयुक्ताक्षर कहलाते हैं; जैसे–

त् + थ = त्थ → कत्था, हत्था	च् + छ = च्छ → अच्छा, मच्छर
प् + य = प्य → प्यार, प्यास	ब् + य = ब्य → ब्यार, ब्याह

4. आगत वर्ण – कुछ वर्ण हिंदी में मिलकर प्रयोग होने लगे हैं, इन्हें आगत वर्ण कहते हैं; जैसे– क़, ज़, फ़, ख़, ग़, ऑ।

5. अतिरिक्त वर्ण – 'ड' तथा 'ढ' के विकसति रूप क्रमशः 'ड़' तथा 'ढ़' अतिरिक्त वर्ण हैं। इनका प्रयोग शब्द के प्रारंभ में न होकर शब्द के बीच में अथवा अंत में होता है; जैसे– सड़क, तड़क, कड़क, गढ़, पढ़, चढ़, चढ़ाई आदि।

'र' का प्रयोग

'र' के संयोग से सर्वाधिक शब्द बनते हैं। परंतु असावधानीवश इसके संयोग में प्रायः गलती हो जाती है; इसलिए इसका प्रयोग करते समय निम्नलिखित नियमों का विशेष रूप से ध्यान रखना चाहिए–

1. स्वर रहित 'र' (र्) को उसके बाद उच्चारित वर्ण के ऊपर (र्‍) के रूप में लगाना चाहिए; जैसे–

र् + द = र्द → गर्दन   र् + व = र्व → पर्वत   र् + त = र्त → बर्तन

विशेष – हलंत का प्रयोग 'अ' रहित वर्ण के लिखने के लिए किया जाता है; जैसे– क्, ख्, ग्, घ् आदि।

2. यदि 'र' से पूर्व कोई स्वर रहित व्यंजन हो तो 'र' उसकी पाई के नीचे की तरफ (्र) के रूप में लगता है;

प् + र = प्र → प्रथम   ब् + र = ब्र → ब्रश   क् + र = क्र → चक्र

3. जब 'ट्' तथा 'ड्' के साथ 'र' का संयोग होता है तो 'र' उनके नीचे की तरफ (ॖ) के रूप में जुड़ता है; जैसे–

ट् + र = ट्र → ट्रक   ड् + र = ड्र → ड्रम

4. 'स' के साथ 'र' जुड़ने पर इसका रूप (्र) हो जाता है; जैसे–

स् + र = स्र → स्रोत, सहस्र

5. 'र' में 'उ' तथा 'ऊ' की मात्राएँ उसके नीचे नहीं लगती, बल्कि उसके पेट में लगती हैं; जैसे–

र् + उ = रु → रुपया   र् + ऊ = रू → रूमाल, रूप

वर्ण-विच्छेद

विच्छेद का अर्थ है- अलग करना। प्रत्येक शब्द में अनेक वर्ण होते हैं। शब्द के वर्णों को अलग-अलग करना वर्ण-विच्छेद कहलाता है; जैसे–

मेरठ → म् + ए + र् + अ + ठ् + अ

रामायण → र् + आ + म् + आ + य् + अ + ण् + अ

परीक्षा → प् + अ + र् + ई + क् + ष् + आ

त्रिभुज → त् + र् + इ + भ् + उ + ज् + अ

आओ दोहराएँ

- भाषा की सबसे छोटी इकाई वर्ण होती है।
- वर्ण दो प्रकार के होते हैं– स्वर तथा व्यंजन।
- स्वर तीन प्रकार के होते हैं– ह्रस्व, दीर्घ तथा प्लुत।
- अं, अँ तथा अः अयोगवाह हैं।
- स्वर बिना किसी की सहायता के बोले जाते हैं।
- व्यंजन का उच्चारण स्वर वर्णों की सहायता से होता है।
- स्वरों के बदले हुए स्वरूप को मात्रा कहते हैं।

अब बताइए

(क) सही विकल्प पर (✓) लगाइए–

1. भाषा की सबसे छोटी इकाई है–
   (i) वर्ण ☐ (ii) शब्द ☐ (iii) वाक्य ☐
2. इनमें ह्रस्व स्वर हैं–
   (i) आ, ई ☐ (ii) अ, इ ☐ (iii) ए, ऐ ☐
3. ये अयोगवाह हैं–
   (i) अ, आ ☐ (ii) उ, ऊ ☐ (iii) अं, अः ☐
4. इनमें आगत ध्वनि है–
   (i) ज़, फ़ ☐ (ii) ज, फ ☐ (iii) त, ल ☐

(ख) रिक्त स्थान भरिए–

1. स्वर ..... प्रकार के होते हैं।
2. दीर्घ स्वर के उच्चारण में ..... स्वर की अपेक्षा दोगुना समय लगता है।
3. ..... स्वर का प्रयोग अब नहीं होता है।
4. क्ष, त्र, ज्ञ, श्र ..... व्यंजन हैं।
5. अनुस्वार का उच्चारण ..... से होता है।

(ग) निम्नलिखित को सुमेल कीजिए–

1. ह्रस्व स्वर	(i) अँ
2. दीर्घ स्वर	(ii) अ, इ, उ, ऋ
3. अनुस्वार	(iii) आ, ई, ऊ, ए
4. अनुनासिक	(iv) अं

(घ) सत्य कथन पर (✓) तथा असत्य कथन पर (✗) लगाइए–

1. 'अ' स्वर की कोई मात्रा नहीं होती है। ☐
2. 'उ' तथा 'ऊ' की मात्राएँ 'र' के ऊपर लगती हैं। ☐
3. स्वरों के बदले हुए स्वरूप को व्यंजन कहते हैं। ☐
4. एक ही व्यंजन के दो बार मिलने पर द्वित्व व्यंजन बनता है। ☐

(ङ) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

1. वर्ण किसे कहते हैं? यह कितने प्रकार के होते हैं?
2. स्वर कितने प्रकार के होते हैं? लिखिए।
3. स्पर्श व्यंजन किसे कहते हैं? इनकी संख्या लिखिए।
4. वर्ण-विच्छेद किसे कहते हैं? उदाहरण सहित लिखिए।

(च) दिए गए शब्दों को अनुस्वार, अनुनासिक या विसर्ग के चिह्न लगाकर लिखिए–

सत	.....	आख	.....	प्रात	.....
नम	.....	दात	.....	बदर	.....
घटा	.....	दुख	.....	मगल	.....
पाच	.....	चादी	.....	सतरा	.....

(छ) दिए गए शब्दों को उचित स्तंभ के नीचे लिखिए–

कच्चा, सिद्ध, श्रम, क्षत्रिय, बच्चा, अच्छा, त्यागी, श्रीमान, ज्ञानी, प्यारा, गद्दा, अन्न

संयुक्त व्यंजन	द्वित्व व्यंजन	संयुक्ताक्षर
.....	.....	.....
.....	.....	.....
.....	.....	.....
.....	.....	.....

(ज) निम्नलिखित के वर्ण-विच्छेद करके लिखिए–

नेहरू	.....	राजीव	.....
इलाहाबाद	.....	नागपुर	.....
प्रणाम	.....	साइकिल	.....